अध्याय 16

अय्यूब का उत्तर (भाग 1)

अध्याय 16 और 17 में एलीपज को अय्यूब का दूसरा उत्तर, ''शिकायत'' और ''सफ़ाई'' के बीच बारी-बारी से आता है।[1] जिन लोगों ने इस पुस्तक का अध्ययन बड़े ध्यान से किया है वे जानते हैं कि अय्यूब के दिमाग में, मित्रों के आरोपों का केवल उत्तर देने से यह आने लगता है कि उसके दु:ख उठाने के कारण को परमेश्वर ही समझा सकता है। फ्रांसिस आई. एंड्रसन ने कहा कि ''अय्यूब के पास दो दृढ़ तथ्य हैं: वह किसी बड़े अपराध का दोषी नहीं है और परमेश्वर को जो भाता वह वही करता है।''[2] वह दुविधा में समझता है कि एक परमेश्वर ही है, जिसके पास वह मुड़ सकता है, और वही उसका शत्रु है।

''तुम सब के सब निकम्मे शांतिदाता हो'' (16:1-5)

[1]तब अय्यूब ने कहा, [2]''ऐसी बहुत सी बातें मैं सुन चुका हूँ, तुम सब के सब निकम्मे शान्तिदाता हो। [3]क्या व्यर्थ बातों का अन्त कभी होगा? तू कौन सी बात से झिड़ककर उत्तर देता है। [4]जो तुम्हारी दशा मेरी सी होती, तो मैं भी तुम्हारी सी बातें कर सकता; मैं भी तुम्हारे विरुद्ध बातें जोड़ सकता, और तुम्हारे विरुद्ध सिर हिला सकता। [5]वरन् मैं अपने वचनों से तुम को हियाव दिलाता, और बातों से शान्ति देकर तुम्हारा शोक घटा देता।''

आयतें 1, 2. अपने मित्रों को डांट लगाते हुए **अय्यूब** ने अपने उत्तर का आरम्भ किया: **''तुम सब के सब निकम्मे शान्तिदाता हो।''** ''निकम्मे शान्तिदाता'' मूलतया ''परेशानी सी तसल्ली देने वाले'' यानी परेशानी देने वाले हैं। ये लोग ''वे तसल्ली देने वाले थे जिन्होंने शांति देने के बजाय उसकी तकलीफ़ को बढ़ा दिया था।''[3] जॉन ई. हार्टले ने कहा है कि यह वाक्यांश तीखा विरोधाभास है यानी शांति देने केलिए जितने अधिक शब्द वे बोलते हैं उतनी ही पीड़ा वे उसको पहुंचाते हैं।[4] अय्यूब एलीपज के दावे को काट रहा था कि मित्रों की बातें ''परमेश्वर की शांतिदायक बातें'' थीं (15:11)। ''निकम्मे'' या ''परेशानी'' (*'amal, अमाल*) शब्द वही है जिसका अनुवाद एलीपज के भाषण के अंत में ''उपद्रव'' हुआ (15:35); अय्यूब ने एलीपज के ही शब्द को उसके विरुद्ध मोड़ दिया (देखें NJPSV)।

आयत 3. ''क्या व्यर्थ बातों का अन्त कभी होगा?'' एलीपज ने अय्यूब से पूछा था, ''क्या बुद्धिमान को उचित है कि अज्ञानता के साथ उत्तर दे, या अपने अन्त:करण को पूरबी पवन से भरे?'' (15:2)। ''व्यर्थ बातें'' अज्ञानता की बातें वे हैं जिनमें कोई तुक नहीं रहता। **''तू कौन सी बात से झिड़ककर उत्तर देता है।''** इब्रानी भाषा में एकवचन सर्वनाम ''तू'' संकेत देता है कि एलीपज अय्यूब को सम्बोधित कर रहा था। उसकी समझ में नहीं आया कि एलीपज को उसे जवाब देते रहने को विवश किस बात ने किया।

आयत 4. अय्यूब ने मित्रों से कहा कि वह उनके साथ वैसा ही बर्ताव कर सकता था जैसा

वे उसके साथ कर रहे हैं, यदि उनकी परिस्थितियां उसके हित में होतीं। वह उनके पाप के लिए उन पर दोष लगाते हुए अच्छे अच्छे भाषण दे सकता था, और उनका मज़ाक भी उड़ा सकता था। **सिर हिला**ना तुच्छ जानने का प्रतीक था (भजन संहिता 22:7; यिर्मयाह 48:27; मत्ती 27:39)।

आयत 5. इस आयत को कम से कम दो तरीकों से समझा जा सकता है। कुछ विद्वानों का विचार है कि अय्यूब ताने देकर बात कर रहा था। विलियम डी. रेबन ने लिखा है, ''बातों के अलावा वह उन्हें किसी और बात से मज़बूत नहीं कर सकता। यह वास्तविक सहानुभूति नहीं है।'' दूसरे लोग इस आयत को, आयत 4 की तुलना में देखते हैं। NLT में इस प्रकार से अनुवाद किया गया है: ''परन्तु मैं ऐसा न करता। मैं इस तरीके से बात करता जिससे तुम्हें सहायता मिलती। मैं तुम्हारे दुःख को दूर करने की कोशिश करता।'' यह बाद वाली व्याख्या सुनहरी नियम की अभिव्यक्ति है कि ''तुम भी दूसरों के साथ वैसा ही करो जैसा तुम चाहते हो कि वे तुम्हारे साथ करें'' (लूका 6:31; NIV)।

''परमेश्वर मेरा बैरी बन गया है'' (16:6-17)

[6]''चाहे मैं बोलूँ तौभी मेरा शोक न घटेगा, चाहे मैं चुप रहूँ, तौभी मेरा दुःख कुछ कम न होगा। [7]परन्तु अब उसने मुझे उकता दिया है; उसने मेरे सारे परिवार को उजाड़ डाला है। [8]उसने जो मेरे शरीर को सुखा डाला है, वह मेरे विरुद्ध साक्षी ठहरा है, और मेरा दुबलापन मेरे विरुद्ध खड़ा होकर मेरे सामने साक्षी देता है। [9]उसने क्रोध में आकर मुझ को फाड़ा और मेरे पीछे पड़ा है; वह मेरे विरुद्ध दाँत पीसता; और मेरा बैरी मुझ को आँखें दिखाता है। [10]अब लोग मुझ पर मुँह पसारते हैं, और मेरी नामधराई करके मेरे गाल पर थप्पड़ मारते, और मेरे विरुद्ध भीड़ लगाते हैं। [11]परमेश्वर ने मुझे कुटिलों के वश में कर दिया, और दुष्ट लोगों के हाथ में फेंक दिया है। [12]मैं सुख से रहता था, और उसने मुझे चूर चूर कर डाला; उसने मेरी गर्दन पकड़कर मुझे टुकड़े टुकड़े कर दिया; फिर उसने मुझे अपना निशाना बनाकर खड़ा किया है। [13]उसके तीर मेरे चारों ओर उड़ रहे हैं, वह निर्दय होकर मेरे गुर्दों को बेधता है, और मेरा पित्त भूमि पर बहाता है। [14]वह शूर के समान मुझ पर धावा करके मुझे चोट पर चोट पहुँचाकर घायल करता है। [15]मैं ने अपनी खाल पर टाट को सी लिया है, और अपना बल मिट्टी में मिला दिया है। [16]रोते रोते मेरा मुँह सूज गया है, और मेरी आँखों पर घोर अन्धकार छा गया है; [17]तौभी मुझ से कोई उपद्रव नहीं हुआ है, और मेरी प्रार्थना पवित्र है।''

इस पद्य में अय्यूब ने अपने दुःख का कारण नहीं पूछा। उसने अपनी हालत पर विचार किया और परमेश्वर पर उसका शत्रु होने का आरोप लगा दिया। इस आरोप में, ''अय्यूब वही गलती करता है जो बड़ी दुष्टता का आरोप लगाने में उसके मित्रों ने की थी; दोनों ही मामलों में, हर कोई सच्चाई से अनजान था।''[6]

अय्यूब ने अपने विरुद्ध परमेश्वर के कामों को जंगली जीव (16:9); विश्वासघात (16:11); पहलवान (16:12); धनुषधारी (16:12, 13); और योद्धा (16:14) के कामों से मिलाया। इन विवरणों की भाषा अत्यंत तीखी थी। यह पुस्तक में दिए गए सबसे कठोर विवरणों में से एक है।

आयत 6. अय्यूब ने चाहे बात की या वह खामोश रहा पर उसका **शोक** उसके साथ रहा। उसने इस आशा से कि परमेश्वर उसकी बात को सुनकर उसका उत्तर देगा बात करना जारी रखने का निर्णय लिया।

आयत 7. अपने पिछले भाषण में एलीपज ने कहा था कि ''भक्तिहीन के परिवार से कुछ बन न पड़ेगा'' (15:34 पर टिप्पणियां देखें)। अय्यूब ने परमेश्वर पर उसके **परिवार** (*'edath, ऐडाथ*) को नाश करने का आरोप लगाते हुए प्रतिक्रिया दी बेकसूर होने के बावजूद। अय्यूब का ''परिवार'' उसके बेटों, बेटियों, और सेवकों सहित उसके घर के मरने वाले वे सब लोग थे जो उस परिवार के ऊपर निर्भर थे (1:13-19)।

आयत 8. ''उसने जो मेरे शरीर को सुखा डाला है, वह मेरे विरुद्ध साक्षी ठहरा है, और मेरा दुबलापन मेरे विरुद्ध खड़ा होकर मेरे सामने साक्षी देता है।'' इन समानांतर पंक्तियों में अय्यूब ने इस तथ्य पर विलाप किया कि उसका शरीर सूख गया था। उसने चाहे परमेश्वर के विरुद्ध कोई गम्भीर अपराध किया और उसकी शारीरिक अवस्था उसके मित्र और उसके पड़ोसियों के लिए इस बात की ''साक्षी'' थी कि उसने किया है। अय्यूब ने अपनी हालत के लिए शैतान की भूमिका से अनजान होकर परमेश्वर को दोषी ठहरा दिया (देखें 2:1-8)।

आयत 9. अय्यूब ने परमेश्वर पर उसे जंगली जानवर की तरह अपना शिकार बनाने के लिए उसके उसे फाड़ खाने का आरोप लगाया (देखें 10:16)। **मेरे पीछे पड़ा है** इब्रानी क्रिया शब्द *śatam* (*सैटम*) से लिया गया है जिसका अनुवाद ''घृणा'' या ''बैर रखना'' या ''आक्रमण'' हो सकता है। हार्टले ने इब्रानी शब्द *śatan* (*सैटन*) के शब्द और अर्थ में समान पर ध्यान दिलाया जिसे ''विरोधी'' या ''शैतान'' अनुवाद किया जा सकता है (1:6, 7 पर टिप्पणियां देखें)। उसने लिखा:

> अपनी पीड़ा में परमेश्वर की भूमिका को न समझते हुए, अय्यूब को डर है कि कहीं परमेश्वर उसका शत्रु न बन गया हो। ... इस कठिन समय में उसकी असली परीक्षा है। उसके नज़रीये से यदि वही परमेश्वर जिस पर उसने भरोसा किया है उसे अचम्भित करता है तो वह वास्तव में उसका शैतान (विरोधी) नहीं है।[7]

आयत 10. अपने लोगों के बीच एक सम्मानित अगुवे के रूप में अय्यूब की जो प्रतिष्ठा थी, वह खो चुकी थी (29:7-25)। सम्मानित और सराहे जाने के बजाय उसके साथ अनादर और **नामधराई** वाला व्यवहार किया जाता था। लोग अपने चेहरे के हाव-भाव से, गालियां देकर और उसे बुरा-भला कहकर अय्यूब का अपमान करते थे।

आयत 11. अय्यूब ने परमेश्वर को एक विश्वासघाती के रूप में दिखाया, जिसने उसे बैरी **के हाथ में** दे दिया था। मित्रों के आरोपों का खण्डन करते हुए (8:22; 11:20; 15:20-35) उसने अपने आपको विशुद्ध रूप में **दुष्ट लोगों** से अलग किया।

आयतें 12, 13. अय्यूब किसी समय खुशहाल जीवन बिताते हुए **सुख से रहता था**। परन्तु परमेश्वर ने एक पहलवान की तरह उसके ऊपर हमला कर दिया। उसे **गर्दन पकड़कर** (देखें उत्पत्ति 49:8), उसने उसे **टुकड़े टुकड़े कर दिया** था।

इसके बाद परमेश्वर को एक तीरअंदाज़ के रूप में दिखाया गया जो अय्यूब को **निशाना**

बनाकर उस पर **तीर** चलाता है (देखें 6:4; 7:20)। ''तीरों'' के बजाय कुछ संस्करणों में ''धनुषधारी'' है (KJV; ASV; NIV; NRSV)। ''**वह निर्दय होकर मेरे गुर्दों को बेधता है, और मेरा पित्त भूमि पर बहाता है।**'' अय्यूब को लगा कि परमेश्वर के कई तीर निशाने पर लगे हैं जिससे उसके प्रमुख अंग छिद गए हैं (देखें भजन संहिता 38:2; 64:7)।

आयत 14. अय्यूब ने परमेश्वर को **शूर** के साथ मिलाया और अपने आपको उस शहरपनाह से जिसके ऊपर हमला हो गया था। **चोट** शहरपनाह की उस जगह को कहा गया है जो बुर्ज से टूट गई (यहेजकेल 4:2; 21:22; 26:9)। परमेश्वर की ओर से मिलने वाले लगातार प्रहारों के बाद अय्यूब वह असहाय नगर हो गया था जो पूर्ण विनाश के लिए शत्रु के सामने हो।

आयत 15. टाट पहनना आम तौर पर शोक का प्रतीक होता था (भजन संहिता 30:11; 35:13; यशायाह 15:3; यिर्मयाह 6:26; योएल 1:8)। ''सींग ऊंचा करना'' शक्ति, प्रताप और छुटकारे का प्रतीक है (भजन संहिता 75:4, 5, 10; 89:17, 24)। यह अभिव्यक्ति ताकतवर जानवर जैसे जंगली सांड के रूपक पर आधारित थी (भजन संहिता 92:10)। इसे ऊंचा उठाने के बजाय अय्यूब ने कहा कि उसने **अपना बल मिट्टी में मिला** देना था। वह उस कमज़ोरी, अपमान, और अकेलेपन पर ज़ोर दे रहा था जो उसे अपने अंदर महसूस हो रहा था।

आयत 16. अय्यूब ने अपने ऊपर आने वाली परीक्षाओं के लिए अपनी प्रतिक्रिया बताई। वह इतना रोया था कि उसका **मुंह** लाल हो गया और उसकी **आंखें** काली पड़ गई थीं। उसकी पीड़ा इतनी अधिक थी कि वह इस विवरण से पता चलती है।

आयत 17. ''तौभी मुझ से कोई उपद्रव नहीं हुआ है, और मेरी प्रार्थना पवित्र है।'' बाद में अय्यूब ने दावा किया कि उसके हाथ शुद्ध हैं: ''मेरे हाथों को कुछ कलंक [नहीं] लगा'' (31:7)। रेबर्न ने लिखा है, ''प्रार्थना के सम्बन्ध में *पवित्र* का अर्थ परमेश्वर को आदर देने और सम्मान देने के लिए है।''[8] अपने पूरे भाषणों में अय्यूब ने इस बात का विरोध किया कि उसका दु:ख उसके किसी बड़े पाप के कारण नहीं था (6:10; 12:4; 13:18; 27:5, 6)।

''स्वर्ग में मेरा साक्षी है'' (16:18-22)

[18]''हे पृथ्वी, तू मेरे लहू को न ढाँपना, और मेरी दोहाई कहीं न रुके। [19]अब भी स्वर्ग में मेरा साक्षी है, और मेरा गवाह ऊपर है। [20]मेरे मित्र मुझ से घृणा करते हैं; परन्तु मैं परमेश्वर के सामने आँसू बहाता हूँ, [21]कि कोई परमेश्वर के सामने सज्जन का मुकद्दमा लड़े, जैसा कोई अपने पड़ोसी के लिये लड़ता है। [22]क्योंकि थोड़े ही वर्षों के बीतने पर मैं उस मार्ग से चला जाऊँगा, जिससे मैं फिर वापिस न लौटूँगा।''

इस भाषण के बीच में हम उम्मीद की किरण देखते हैं। रॉबर्ट एल. आल्डन ने टिप्पणी की, ''माना कि अय्यूब कभी कुछ कहता है और कभी कुछ। जो लोग दु:ख और बीमारी की पीड़ाओं के बीच भी स्थिरता चाहते हैं वे उन सकारात्मक वचनों में से बताते हैं जो दृढ़ता, ईश्वरीय प्रबन्ध और मृत्यु के बाद जीवन का संकेत देते हों।''[9]

आयत 18. ''हे पृथ्वी, तू मेरे लहू को न ढाँपना।'' जब कैन ने अपने धर्मी भाई हाबिल को मार डाला था तो परमेश्वर ने उससे कहा था, ''तू ने क्या किया है? तेरे भाई का लोहू भूमि

में से मेरी ओर चिल्लाकर मेरी दोहाई दे रहा है!'' (उत्पत्ति 4:10)। अय्यूब ने अपने आपको ''हत्या के मासूम शिकार'' से मिलाया।[10] ''**मेरी दोहाई कहीं न रुके।**'' आल्डन ने लिखा है कि ''अय्यूब चाहता था कि उसकी 'दोहाई' दफन न होने पाए, बल्कि उसका जवाब दिया जाए।''[11]

आयत 19. बदले के लिए अय्यूब की उम्मीद **साक्षी** (*'ed, इड*) या **गवाह** (*śahed, साहेड*) की उसकी इच्छा के द्वारा व्यक्त की गई। NASB में पुलिंग संज्ञारूप ''एडवोकेट'' पुराने नियम में एक बार केवल यहीं मिलता है। ''साक्षी'' किसी और जगह मानवीय जीवों के लिए इस्तेमाल हुआ है (व्यवस्थाविवरण 19:15; नीतिवचन 14:5, 25; यशायाह 55:4), पर यहां पर इसे परमेश्वर के लिए इस्तेमाल किया गया है क्योंकि वह **स्वर्ग में** है। रॉबर्ट गोर्डिस ने लिखा है:

> अय्यूब और उसके मित्रों के बीच बातचीत अब लगभग खत्म हो चुकी है। परमेश्वर की उनकी अवधारणा उसके किसी काम की नहीं। वह अपने निरर्थक दु:ख की कड़ी परीक्षा की भट्टी में तप रहा एक नए विश्वास की तलाश में आगे बढ़ता है, जो उसके अपने निर्दोष होने के उसके ज्ञान के जैसा ही स्थिर है, यह विश्वास कि मनुष्य के क्रूर अन्यायपूर्ण दु:ख के पीछे संसार में कोई न कोई सच्चा प्रबन्ध होगा।[12]

19:23–27 में इस विचार को और विस्तार दिया जाएगा। ''साक्षी'' (16:19) और ''छुड़ाने वाला'' (19:25) दोनों की परमेश्वर के सम्बन्ध में व्याख्या करना सबसे बढ़िया है।[13]

आयत 20. ''मेरे मित्र मुझ से घृणा करते हैं।'' ''घृणा करते हैं'' इब्रानी क्रिया शब्द *lits* (*लिट्स*) के कृदंत रूप का अनुवाद है। ये लोग गुस्ताख, तिरस्कार करने वाले, और अहंकारी हैं क्योंकि वे जानबूझकर अच्छाई से मुंह मोड़ लेते हैं। नीतिवचन में यह स्पष्ट है कि उन्हें इस श्रेणी में उनकी मानसिक योग्यता नहीं बल्कि उनका मानसिक व्यवहार लाता है। ठट्ठेबाज के सम्बन्ध में डेरेक किडनर ने लिखा है, ''जो शरारत वह करता है वह आम मूर्ख वाली बिना सोचे समझे की गई शरारत नहीं बल्कि उससे गहरा नुक्सान पहुंचाने वाले का है और जानबूझकर उपद्रवी का 'असली रूप' है ([नीतिवचन] 21:24; 22:10; 29:8)।''[14]

आयत 21. मुकद्दमा लड़े शब्द इब्रानी भाषा के उसी शब्द (*yakach, याकाच*) से लिया गया है जो 9:33. में ''बिचवई'' है। परन्तु यहां पर अय्यूब ने परमेश्वर से ऐसे सीधे बात करने की कल्पना की **जैसा कोई अपने पड़ोसी के लिए लड़ता है**। यह समचुच में अद्‌भुत विचार है!

आयत 22. ''क्योंकि थोड़े ही वर्षों के बीतने पर मैं उस मार्ग से चला जाऊँगा, जिससे मैं फिर वापिस न लौटूँगा।'' अय्यूब को समझ आ चुका था कि उसके पास जीने के लिए थोड़ा ही समय है। पहले भाषण में अय्यूब ने कहा था, ''क्या मेरे दिन थोड़े नहीं? मुझे छोड़ दे, और मेरी ओर से मुँह फेर ले, कि मेरा मन थोड़ा शान्त हो जाए इससे पहले कि मैं वहाँ जाऊँ, जहाँ से फिर न लौटूँगा, अर्थात् अन्धियारे और घोर अन्धकार के देश में, जहाँ अन्धकार ही अन्धकार है'' (10:20, 21)। बहुत से विद्वानों का मत है कि आयत 22 वाला विचार अगले अध्याय में जारी रहता है।

प्रासंगिकता

''मेरा गवाह ऊपर है'' (अध्याय 16)

शैतान का उल्लेख इस पुस्तक के आरम्भ में चाहे नहीं किया गया था पर इस जबर्दस्त छंदबद्ध कहानी में विरोधी ''वह दुष्ट'' ही था। शैतान लगातार ''गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए'' (1 पतरस 5:8)। पर्दे के पीछे इस कहानी में जिसका किसी को पता नहीं, शैतान अय्यूब पर हमला करके उसे फाड़ खाने और उसके विश्वास को खत्म करने के लिए अपने शस्त्रागार में से हर प्रकार के हथियारों का इस्तेमाल कर रहा था। ''उस दुष्ट के जलते हुए तीर'' (इफिसियों 6:16) अय्यूब को ज़बानी तौर पर लग रहे थे और अफ़सोस कि वह अय्यूब के तीनों मित्रों के आरोप लगाने वाली बातों से आ रहे थे।

प्रकाशितवाक्य 12:10 हमें बताता है कि शैतान ''हमारे भाइयों पर दोष लगाने वाला'' है। परमेश्वर के विरोधी के रूप में शैतान एलीपज, बिलदद और सोपर का इस्तेमाल उनके भाई अय्यूब के ऊपर आरोप लगाने के लिए कर रहा था। जिस प्रकार से अपनी दुर्दशा में शैतान के योगदान का अय्यूब को कुछ पता नहीं था, उसी प्रकार से अय्यूब के मित्र भी इस बात से बेखबर थे कि शैतान अपने मिशन को पूरा करने के लिए उनका फायदा उठाना चाहता है (देखें 2 कुरिन्थियों 2:11)। अय्यूब के दिल और दिमाग में जगह बनाने के लिए शैतान उनके कठोर, आरोप लगाने वाले शब्दों का इस्तेमाल कर रहा था। अय्यूब का विरोधी खतरनाक था इसलिए उसे ऐसा गवाह ढूंढ़ना आवश्यक था जो शक्ति और सहायता देते हुए उसके साथ खड़ा हो। इस अध्याय में अय्यूब ने अपने विश्वास के खज़ाने में गहराई तक पहुंचकर अपना असली सहायक पा लेना था।

अय्यूब की कहानी हमें अपने विश्वास में मज़बूत बने रहने और दृढ़ रहने के लिए उत्साहित करती है। जब हम पर परीक्षा आए और हम परखे जाएं तो हम जानते हैं कि हम अकेले नहीं हैं। पतरस ने लिखा है:

> विश्वास में दृढ़ होकर, और यह जानकर उसका सामना करो, कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं, ऐसे ही दुःख सह रहे हैं। अब परमेश्वर सारे अनुग्रह का दाता है, जिसने तुम्हें मसीह में अपनी अनन्त महिमा के लिये बुलाया, तुम्हारे थोड़ी देर तक दुःख उठाने के बाद आप ही तुम्हें सिद्ध और स्थिर और बलवन्त करेगा (1 पतरस 5:9, 10)।

अय्यूब को ऐसे सहायक की आवश्यकता थी जो उसे मज़बूत और दृढ़ करे। मसीही लोगों के रूप में हमारा सहायक ऊपर है और वह हमें मज़बूत करने के साथ-साथ दृढ़ भी करेगा।

अय्यूब के मित्र ''निकम्मे शांतिदाता'' थे। अय्यूब अब ऐसी स्थिति में था कि उसे मालूम नहीं था कि अपने आरोप लगाने वालों को क्या कहे या उन्हें कैसे जवाब दे। अय्यूब ने अपने तीनों आरोप लगाने वालों की ओर देखा और सीधे-सीधे उनसे बात करके उन्हें ''निकम्मे शांतिदाता'' कह दिया (16:2)। अय्यूब के तीनों मित्र कई दिन से उसके साथ थे, पर वे उसे शांति या प्रोत्साहन नहीं दे रहे थे।

बाइबल हमें एक दूसरे को शांति देने और प्रोत्साहन देने को कहती है। इब्रानियों 3:13 हमें

बताता है कि ''हर दिन एक दूसरे को समझाते रहो।'' 2 कुरिन्थियों 1:3, 4, में पौलुस ने लिखा, ''हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर, और पिता का धन्यवाद हो, जो दया का पिता, और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर है। वह हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है; ताकि हम उस शान्ति के कारण जो परमेश्वर हमें देता है, उन्हें भी शान्ति दे सकें, जो किसी प्रकार के क्लेश में हों।''

स्पष्टतया अय्यूब तकलीफ़ में था, पर उसके तीनों मित्र उसे शांति और प्रोत्साहन देने का काम नहीं कर रहे थे। वास्तव में वे ''निकम्मे शांतिदाता'' थे और उन्होंने अपनी ''व्यर्थ बातों'' और लम्बे-लम्बे भाषणों से जो कभी न खत्म होने वाले लगते थे, उसे निराश ही किया था (16:3)। अय्यूब ने बातचीत को घुमाने की कोशिश की जब उसने उन से अपनी भूमिकाओं के उलट होने को देखने के लिए कहा। अय्यूब ने अपने तीनों मित्रों को बताया कि यदि उनकी भूमिकाएं उलट होती तो उसने उन्हें मज़बूती और शांति देने का प्रयास करना था ताकि ''अपने वचनों से'' वह उनका ''शोक घटा'' सकता (16:5)। अच्छे शांतिदाताओं को अपने परेशान मित्रों के दु:ख को घटाना चाहिए और सच्चे मित्रों को दु:ख बांटने में सहायता करनी चाहिए। अफ़सोस कि अय्यूब के तीनों मित्रों ने ऐसा नहीं किया था।

अय्यूब ने एक दु:खद और गलत निष्कर्ष निकाला। अपने जवाब में यहां पर उसकी टिप्पणियां परमेश्वर की ओर मुड़ गईं। अय्यूब ने ज़ोर-ज़ोर से बातें करते हुए अपनी हालत को दोहराया। अपने तीनों मित्रों के ये तीखे और लम्बे-लम्बे लैक्चर सुनने के बाद और परमेश्वर की ओर से अपने प्रश्नों का उत्तर न मिलने के बाद अय्यूब ने यह निष्कर्ष निकाला कि अवश्य परमेश्वर उसका विरोधी होगा। अय्यूब ने कहा, ''परन्तु अब उसने मुझे उक्ता दिया है; उसने मेरे सारे परिवार को उजाड़ डाला है। उसने जो मेरे शरीर को सुखा डाला है, ... उसने क्रोध में आकर मुझ को फाड़ा और मेरे पीछे पड़ा है; वह मेरे विरुद्ध दाँत पीसता; और मेरा बैरी मुझ को आँखें दिखाता है'' (16:7-9)। ''अय्यूब उक्ता गया था''; वह शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप में टूट चुका था। अफ़सोस कि उसने अपने उक्ताने का कारण परमेश्वर को बताया और गलत निष्कर्ष निकाला। अय्यूब ने परमेश्वर को अपने विरोधी के रूप में देखा। यह दु:खद बात होती है जब कोई प्रभु परमेश्वर के बारे में इस प्रकार से सोचता है।

1976 में मैं हार्डिंग यूनिवर्सिटी में फ्रेशमैन बाइबल क्लास में बैठा था। प्रोफेसर डॉक्टर नील प्रायोर थे और उनका मेरे ऊपर बड़ा गहरा प्रभाव था। मुझे डॉक्टर प्रायोर का रोमियों 8:31 को उद्धृत करना याद है जहां प्रेरित पौलुस ने प्रश्न पूछा था, ''यदि परमेश्वर हमारी ओर है तो हमारा विरोधी कौन है?'' मैं कभी नहीं भूलूंगा कि अपनी आंखों में चमक के साथ इस तथ्य पर ज़ोर देते हुए कि परमेश्वर हमारी ओर है, डॉक्टर प्रायोर कितने भावुक और कितने आश्वस्त थे! हमारा विरोधी शैतान है, परमेश्वर नहीं। परमेश्वर हमारी ओर है! परन्तु अय्यूब इस बात को समझ नहीं पाया (16:11)। अय्यूब का मानना था कि परमेश्वर ने उसे दुष्ट के हाथ में सौंप दिया और फैंक दिया था। अय्यूब ने कहा, ''उसने मुझे चूर-चूर कर डाला; उसने मेरी गर्दन पकड़कर मुझे टुकड़े टुकड़े कर दिया; फिर उसने मुझे अपना निशाना बनाकर खड़ा किया है। उसके तीर मेरे चारों ओर उड़ रहे हैं'' (16:12, 13)।

हमारा परमेश्वर अपने बच्चों के साथ ऐसा व्यवहार नहीं करता। हमारा परमेश्वर हमें पकड़कर, झंजोड़ता नहीं है या हमें अपने तीरों का निशाना नहीं बनाता है। हम उस दुष्ट (लूका

22:31), और किसी भी ''जलते हुए तीर'' का निशाना हैं जो उसकी ओर से हमारी ओर आता है (इफिसियों 6:16)। अय्यूब ने यह निष्कर्ष निकाल लिया था कि परमेश्वर ''निर्दयी'' परमेश्वर है (16:13), परन्तु सच्चाई से कुछ भी आगे नहीं हो सकता। भजन संहिता 100:5 में भजनकार ने लिखा, ''क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करुणा सदा के लिये, और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है'' (KJV)।

अय्यूब आस-पास देखते हुए विचार करता रहा। लोगों को अपने आस-पास देखने पर अय्यूब ने जो देखा उसे अच्छा नहीं लगा। उन्होंने उसे अपने शब्दों से और अपने कामों से दु:खी किया था (16:10, 11)। अय्यूब ने उन्हें ''बदमाश'' कहा और उसका मानना था कि वे ''दुष्ट'' हैं। उसके आस-पास के लोगों ने बेगुनाह होने के अय्यूब के दावों को नकार दिया था और वे उसके साथ रूखा व्यवहार कर रहे थे। अय्यूब ने यहां तक कहा कि उन्होंने उसके विरुद्ध भीड़ लगा ली थी (16:10)।

अय्यूब को परमेश्वर में अपना गवाह मिला। परमेश्वर को अपने विरोधी के रूप में विचार करन के बाद अय्यूब ने अपने आस-पास के दुष्ट लोगों को देखा और उसने बताया कि उसे कैसा लगा था। उसने कहा, ''रोते रोते मेरा मुँह सूज गया है, और मेरी आँखों पर घोर अन्धकार छा गया है'' (16:16)। क्या आपने कभी किसी को गहरे शोक में डूबे देखा है और उसके चेहरे को देखकर आपको पता चल गया था कि वह गहरी निराशा में है? अय्यूब का चेहरा निराशा से भरा था और यह स्पष्ट था कि वह गम्भीर पीड़ा में है। अय्यूब को किसी ऐसे गवाह की आवश्यकता बहुत अधिक थी जो उसे सांत्वना और सामर्थ देता। अपने बेकसूर होने पर अड़े रहने के बाद अय्यूब ने ऊपर की ओर देखते हुए घोषणा की, ''मेरा गवाह ऊपर है'' (16:19)। अय्यूब ने जब ऊपर को देखा तो उसे अपना गवाह मिल गया। मसीही लोगों के रूप में हमारा गवाह ऊपर है जो उसके सामने, जो ''हमारी ओर'' है, हमें मज़बूत करेगा, हमें सांत्वना देगा और हमारा मुकद्दमा रखेगा। आज ऊपर हमारा सहायक या गवाह यीशु है। यूहन्ना ने लिखा कि ''पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात धार्मिक यीशु मसीह'' (1 यूहन्ना 2:1)।

सारांश। यीशु के भाई याकूब ने लिखा है:

> हे भाइयो, जिन भविष्यवक्ताओं ने प्रभु के नाम से बातें कीं, उन्हें दु:ख उठाने और धीरज धरने का एक आदर्श समझो। देखो, हम धीरज धरनेवालों को धन्य कहते हैं। तुमने अय्यूब के धीरज के विषय में तो सुना ही है, और प्रभु की ओर से जो उसका प्रतिफल हुआ उसे भी जान लिया है, जिससे प्रभु की अत्यन्त करुणा और दया प्रगट होती है (याकूब 5:10, 11)।

अध्याय 16 में आरम्भ में अय्यूब को विश्वास नहीं था कि परमेश्वर दयालु है; फिर अय्यूब ने ऊपर की ओर देखा और अपना गवाह पाया। उस स्वर्गीय दृष्टिकोण ने उस डटे रहने और अंत में जानने की सामर्थ दी कि परमेश्वर सचमुच में दयालु है।9 एफ. मिलस

टिप्पणियां

[1]विलियम डी. रेबर्न को यह पैटर्न दिखाई दिया: मित्रों से शिकायत (16:2-5); परमेश्वर से शिकायत (16:6-14); आत्म रक्षा (16:15-17); याचना (16:18-21); शिकायत (16:22-17:2); याचना (17:3-5); परमेश्वर और लोगों के विरुद्ध शिकायत (17:6, 7); मित्रों के विरुद्ध शिकायत (17:8-10); मृत्यु और अधोलोक के सामने, मित्रों की शिकायत (17:11-16)। (विलियम डी. रेबर्न, *ए हैंडबुक ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब* [न्यू यॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीस, 1992], 305.) [2]फ्रांसिस आई. एंडरसन, *अय्यूब, ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री,* टिंडेल ओल्ड टैस्टामैंट कॉमैंट्रीस (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोय: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1974), 179. [3]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 144. [4]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 257. [5]रेबर्न, 308. [6]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 150. [7]हार्टले, 260. [8]रेबर्न, 317. [9]रॉबर्ट एल. आल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 186. [10]हार्टले, 263.

[11]आल्डन 186. [12]रॉबर्ट गोर्डिस, *द बुक ऑफ़ गॉड ऐंड मैन: ए स्टडी ऑफ़ अय्यूब* (शिकागो: द यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 1965), 86. [13]हेली, 155. [14]डेरेक किडनर, *द प्रोवर्ब्स: ऐन इंट्रोडक्शन ऐंड कॉमैंट्री* (लंदन: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1964), 42.